International Journal of Home Science 2019; 5(3): 136-137

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2019; 5(3): 136-137
© 2019 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 07-07-2019
Accepted: 09-08-2019

गुंजन दुबे
शोध छात्र गृह विज्ञान
मध्य प्रदेश भोज (मुक्त)
विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश,
भारत

कामिनी जैन
प्राचार्य, शासकीय गृह विज्ञान
महाविद्यालय, होसंगाबाद,
मध्य प्रदेश, भारत

नीलमा कुँवर
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, ईसीएम, गृह
विज्ञान महाविद्यालय, चन्द्रशेखर
आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक
विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश,
भारत

Correspondence
गुंजन दुबे
शोध छात्र गृह विज्ञान
मध्य प्रदेश भोज (मुक्त)
विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश,
भारत

बाल श्रमिकों की कार्य और आवासीय स्थिति के कारण उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव

गुंजन दुबे, कामिनी जैन, नीलमा कुँवर

सारांश
बालश्रम का उपयोग बुरा नहीं है परन्तु जिन परिस्थितियों एवं जिन शर्तों पर इन्हें काम पर लगाया जाता है वह बुरा है। वैसे तो बालश्रम के उपयोग से रोजगार बढ़ता है एवं रोजगार बढ़ने से राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है, किन्तु जब व्यक्तिगत लाभ की दृष्टि से बेचारे नन्हें मुन्नों का शोषण होने लगता है तो कोई भी इसे स्वीकार नहीं कर सकता। बच्चों के श्रम का उनके स्वास्थ्य से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहता है। जिस प्रकार का काम बच्चों से उद्योगों में लिया जाता है उनके स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ता है बच्चों के इस प्रकार के काम करने से परिवार के सामान्य जीवन में बाधा पहुँचती है तथा सामाजिक नियंत्रण टूटने लगता है जो वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए बहुत आवश्यक है। इसलिए मालिकों को चाहिए कि वह बच्चों से उनकी उम्र के हिसाब से कार्य लें और उसी दौरान पौष्टिक भोजन दें तथा खाली समय में उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण की व्यवस्था करें साथ ही आवासीय सुविधा भी दी जाये तो स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

कुट शब्दः कार्य स्थिति, प्रभाव

प्रस्तावना
बालक के कार्य की दशाओं का आशय उस भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक परिवेश से है जिसमें मनुष्य अपने श्रम द्वारा कार्य सम्पन्न करता है। मनुष्य सदा अपने आस–पास के वातावरण से प्रभावित होता रहा है। उसकी कार्य–कुशलता, मनोदशा और स्वास्थ्य तदनुसार ही विकसित होते हैं। अतएत औद्योगिक श्रमिकों के लिए कार्य की दशाओं का अत्यधिक महत्व है और इसलिए मुख्यतः एक स्वस्थ एवं प्रेरणादायक वातावरण श्रमिक को अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करता है जबकि गन्दा आवास और अस्वस्थ वातावरण उनकी कार्य–शक्ति ह्रास करती है। इसलिए यह आत्मसात करना आवश्यक है कि कार्य–कुशलता और कार्य करने की गति बढ़ाने के लिए कार्य की दशायें अच्छी हों। कार्य स्थान के वातावरण का भी श्रमिक की कार्यक्षमता पर प्रभाव होता है। कार्य करने का स्थान यदि स्वच्छ है, उचित प्रकाश, हवा तथा गर्मी और सर्दी से बचाव आदि की पर्याप्ता है तो श्रमिक की कार्यक्षमता अधिक होती है। स्वच्छ पीने के पानी की व्यवस्था, कैन्टीन की व्यवस्था तथा दुर्घटना से बचाव की व्यवस्था का भी श्रमिक पर अच्छा मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है। श्रमिकों के लिए आवास की भी अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए जहां श्रमिक अपने परिवार के साथ रह सकें। गन्दी बस्तियों में रहने वाले श्रमिकों के लिए अच्छे स्वास्थ्य एवं कुशलता की आशा नहीं की जा सकती। भारतीय औद्योगिक नगरों में श्रमिकों के आवास की व्यवस्था बहुत ही खराब है। इस आवश्यकता की पूर्ति करना राज्य का एवं अद्योगपतियों का एक सामूहिक सामाजिक दायित्व है।

उद्देश्य
- बाल श्रमिक की सामाजिक–आर्थिक पृष्टिभूमि का अध्ययन।
- बाल श्रमिक की कार्य स्थिति और आवासीय स्थिति के कारण स्वास्थ्य का प्रभाव।

अध्ययन पद्धति
शोध अध्ययन हेतु होशंगाबाद जिला का चुनाव किया गया है तथा 300 बाल श्रमिकों का चयन किया गया है जो होटल, कचरा बीनने वाले, गैरेज, कृषि, घरों और टेंट हाऊस में काम करने वाले थे। अध्ययन में चर अचर का इस्तेमाल किया गया है। साख्यिकीय विधियां 'टी' टेस्ट, प्रतिशत और सह–संबंध का चुनाव किया गया है।

परिणाम

सारिणी 1: बाल श्रमिक की आयु

क0सं0	आयु (वर्श)	संख्या	प्रतिशत
1.	7 – 8	18	6.0
2.	9 – 10	36	12.0
3.	11 – 12	89	29.6
4.	13 – 14	157	52.3
	कुल	300	99.9

छोटी आयु की अपेक्षा बड़ी आयु में बाल श्रमिक अधिक संलग्न हैं साथ ही साथ यह विडम्बना है कि अभिभावक 6–7 वर्ष में ही अपने बच्चों को कार्य में संलग्न कर आर्थिक अर्जन को मजबूर कर रहे हैं जोकि समाज के लिए चिंतनीय पहलू है।

सारिणी 2: दिन में कितने घंटे कार्य

क0सं0	दिन में कार्य के घंटे	संख्या	प्रतिशत
1.	4 से कम	33	11.0
2.	5 – 6	62	20.6
3.	7 – 8	156	52.0
4.	8 घंटे से अधिक	49	16.3
	कुल	300	99.9

प्रत्येक मनुष्य की अपनी कार्य क्षमता होती है जिसके बाद उसके कार्य की गति में ह्रास होने लगता है, चूँकि बच्चे छोटे एवं नाजुक होते हैं अतः वह शारीरिक परिश्रम से जल्द ही थक जाते हैं वहीं कई बार कार्य का प्रकार भी कार्य अवधि को प्रभावित करता है जैसे पन्नी बीनने वाले, समाचार पत्र बांटने वाले आदि बाल श्रमिकों की कार्य अवधि कम होती है जबकि घरेलू काम, होटलों, गैराज का काम आदि से कार्य क्षेत्र हैं जिनमें कार्य की अवधि अधिक होती है। आंकड़े बता रहे हैं कि सर्वाधिक 52.0 प्रतिशत 7–8 घंटे बाल श्रमिक कार्य करते हैं वहीं 8 से अधिक घंटों का प्रतिशत 16.3 हैं । 11.0 प्रतिशत 4 से कम घंटे तो 20.6 प्रतिशत 5–6 घंटे काम करते हैं।

सारिणी 3: सुविधाजनक स्थिति में कार्य

क0सं0	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	89	29.6
2.	नहीं	211	70.3
	कुल	300	99.9

बाल श्रमिक जोकि 5–13 वर्श आयु के हैं और यही वर्ष उनके शारीरिक विकास के लिए महत्वपूर्ण होता है वह जिन शारीरिक अवस्थाओं में बैठकर कार्य करते हैं उसी तरह का उनका शारीरिक विकास होता है। इन अवस्थाओं के कारण उनमें बहुत सी शारीरिक बीमारियाँ जैसे त्वचा संबंधी रोग, श्रवण संबंधी रोग, हड्डी के रोग, आँखों के रोग आदि देखे जाते हैं क्योंकि अनेकानेक शोध यह बताते हैं कि बाल श्रमिकों की कार्यदशायें उचित नहीं हैं वे जिन स्थानों पर कार्य करते हैं, साधारणतः वह स्थान अंधेरा एवं सीलन युक्त, वायुवीजन का अभाव, रासायनिक पदार्थों के सम्पर्क के साथ कार्य, अत्यधिक शोर में काम आदि ऐसे कारक हैं जोकि बच्चों को उपरोक्त बीमारियां देते हैं उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि 70.3 प्रतिशत सुविधाजनक स्थिति में कार्य नहीं कर रहे हें वहीं 29.6 प्रतिशत ने बताया कि वे सुविधाजनक स्थितियों में काम करते हैं। संभवतः से उत्तरदाता घरेलू आदि कार्य करते हैं।

सारिणी 4: आवास में स्वच्छ जल, पर्याप्त प्रकाश एवं वायुविजन की व्यवस्था

क0सं0	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	13	4.3
2.	नहीं	287	95.6
	कुल	300	99.9

बाल श्रमिक अपने कार्य स्थल पर तो असंतोषजनक स्थितियों में काम करते ही हैं किन्तु अपने आवास पर उनकी स्थिति कैसी है, यह जानकारी एकत्रित करने का प्रयास किया गया। अधिकांशतः बालश्रमिक गंदी बस्तियों में ही निवास करते हैं। अतः आवासीय स्थितियां भी उचित नहीं हैं। 95.5 प्रतिशत ने कहा कि उनके आवास में स्वच्छ जल, पर्याप्त प्रकाश एवं वायुविजन की व्यवस्था उचित नहीं है। वहीं 4.3 प्रतिशत ने माना कि उनके आवास की स्थिति संतोषजनक है।

निष्कर्ष

यदि कार्य करने वाली जगह का वातावरण साफ सुथरा और आवासीय सुविधायें भी बाल श्रमिकों की अच्छी होती हैं तो कार्य करने की क्षमता बढ़ जाती है और बालक भी अपने कार्य करने से संतुष्ट होते हैं।

सुझाव

1. सरकार को चाहिए कि वह साधारण दर पर बाल श्रमिकों के लिए छात्रावास का निर्माण करायें जिसमें घर जैसी सुविधायें उपलब्ध हों।
2. छात्रावास इण्डस्ट्रियल एरिया के 20–25 कि0मी0 के दायरे में होना चाहिए।

संदर्भ

1. Antonyraj, C. ‘Child labour in India’. ‘Visible School-less-ness’ and ‘Invisible Work’, Ph.D. Thesis, University of Madras, 2002.
2. Bajpai, Asha. Child rights in India. Law, Policy and Practice, Oxford University Press, New Delhi, 2003.